च तु र्थ अ ध्या य

उपसंहार

उपसंहार

हमे ऐसा लगा , कि ` अंजोदीदी ` नाटक हमारे आजकल के परिवार के समस्या को लेकर रचा गया हैं । परिवार के सभी लोग कई बार अपनी सनक या खास विचार के कारण औरोंपर दबाव डालते हैं, उनकी निजी भावनाओं को इच्छा-आकांक्षाओं को, बिना सोचे वे अपने ही भावों को निर्दोष जताते हैं । हाँ । किसी अच्छे विचार या कृति को दूसरों पर लादना, कुछ हदतक ठीक हो सकता हैं, परंतु किसी अच्छी बात का भी ` अति ` हमारे पारिवारिक जीवन को बिगाड देता हैं, क्योंकि हम औरों की इच्छा, आकांक्षा, चाह, अभिरुचि आदि के बारे में कम सोचते हैं । ` अंजोदीदी ` नाटक का प्रधान पात्र ` अंजोदीदी ` एक ऐसा पात्र हैं जो सद्विचारों से प्रवृत हैं किंतु औरोंपर अति के रूप में उसके लादे जानेपर हमारा परिवार ही नहीं, स्वयं ` अंजोदीदी ` को भी बहुत दु:ख झेलना पडता हैं, यहाँ तक कि अंत में वह स्वयं आत्मघात कर लेती हैं । इसी कारण ` अंजोदीदी ` नाटक प्रभावित कर गया ।

नाटक सभी कलाओं में सर्वश्रेष्ठ हैं, यह दृश्यकाव्य और श्रव्यकाव्य भी हैं । ` नाटक को ` पंचमवेद ` कहा जाता हैं । भरतमुनि ने इसे ` नाट्यवेद ` की संज्ञा दी हैं । ` नाटक सभी कलाओं का सुशिक्षित समाहरण-समुच्चय हैं । नाटक परकाय-प्रवेश-विधान हैं । भारतीय दृष्टिकोण में नाटक पुरुषार्थ - चतुष्टय से बध्द हैं । नाटक सभी साहित्य-विधाओं में सर्वश्रेष्ठ हैं - ` काव्येषु नाटकं रम्यम् ` । दार्शनिक

दृष्टि से इस जगत को मंच, ब्रह्म को नाटककार और जीव को अभिनेता माना गया है। नाटक जीवन का अनुकरण है। यह अनुकृतिकला है - 'अनुकृतिर्नाट्यम्'। मंच-पूजा, पात्र-वर्ण-संकेत्य, नाट्य-वेद, पंचम वेद इ. शब्द इस बात की ओर संकेत करते हैं कि नाटक को पूजात्मक यज्ञस्थल की ऊँचाई उपलब्ध थी। नाटक जीवन का सन्निकर्षन है। यह स्वाभाविकता का प्रतिबिंबन और सत्यवत् का सत्याभिनय भी है। साथ ही नाटक एक क्षति-पूर्ति-व्यापार है। नाटक मानवीय संवेदनाओं का संग्रहालय होता है। इसलिए वह आजतक दिनातीत नहीं हुआ। यह चिर नूतन, चिर नवीन सामाजिक अनुबंधन है।

नाटक को 'कलाओं की कला' कहते हैं। परंतु यहाँ इस बात की भी परीक्षा हो जाती है कि कला किस सीमातक कमनीयता को लिये हुए श्रम और श्रम का संरक्षण करती है और सीमा को अतिक्रांत कर किस बिन्दु पर कलाबाजी रह जाती है। आर्ट ही अतिक्रमित होकर आर्टिफिशल हो जाता है। इसलिए यह साधनात्मक कौशल की बात होगी कि नाट्य-कला मंच पर मूर्तिमती कला ही बनी रहे, कलाबाजी न हो जाए। इसलिए नाटक एक प्रकार से कृच्छ्र कला और असिधार-धावन-कला है।[१]

नाटक साहित्य की सभी विधाओं का संचय समुच्चय है। नाटक में संवाद, भाषाण, कथोपकथन, कविता, कथा, जीवनी, आत्मकथा, रम्य रचना, इतिहास, भूगोल, कलादर्शन, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र इ. विविध विधाओं, एवं कलारूपों का समाहार होता है। नाटक जन-संचार का प्राचीनतम तथा जीवित माध्यम है। पंचम वेद जैसी आख्या धारण कर नाटक एक ओर पूज्यता की शिखर-शीलता धारण करता है तो दूसरी ओर बहुजन-संप्रेषाण का माध्यम बनकर लोकबद्ध भी हो जाता है। नाटक एक सामूहिक व्यापार है। इसका आयोजन, मंचन बहुतों के द्वारा होता है। अतः नाटक एक संघ-बोध और संघकर्म है।[२] इसलिए नाटक का महत्व सर्वोपरि चिरनवीन है।

---

१ नाटक और मंच - निशांतकेतु - पृ. २१-२५।

२ - वही - पृ. ६१ ।

हिंदी नाट्यसाहित्य में उपेंद्रनाथ अश्क जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । उन्होंने हिंदी साहित्य को जो नाटक दिये हैं, वे अपनी अलग विशिष्टताओं, उद्देश्यों से अपना एक अलग ही स्थान रखते हैं । प्रसाद के बाद हिंदी नाटक का जो नयी दिशा में उत्थान हुआ है, उपेंद्रनाथ अश्क उसके प्रमुख प्रतीक और स्तंभ माने जायेंगे ।`[1]

अश्क जी ने सामाजिक और व्यक्तिगत समस्याओं का, प्रधानत: सुपाठ्य संवादों के रूप में निरूपण किया । दोनों प्रवृत्तियों का संमिश्रण, नाटकों की एक नवीन शैली का प्रस्फुटन अश्क जी ने ही किया । प्रसाद पध्दति को तिलांजलि देकर नूतन प्रेरणा, पृथक् दृष्टिकोण, आधुनिक शिल्प--विधान को एक सांचे में ढालकर हिंदी नाटक को निजत्व और सुस्पष्ट रेखा प्रदान की`[2] अश्क जी की प्रमुख विशेषताएँ है, श्रमसाध्य और जानदार पात्रों का सृजन । उनका प्रत्येक पात्र अपनी भाव भंगिमा और वाणी के द्वारा पहचाना जा सकता है । इस गुण के लिए भीषाण आत्मसंवरक्षाण की जरूरत है, पैनी समदर्शी दृष्टि और भिन्न-भिन्न नीति के हृदय में पैठकर उनसे समरस होने की क्षामता चाहिए, जो अश्क जी में है ।`[3] जीवन से नाटकीय वस्तु के चुनने के लिए जिस व्यापक अनुभव की आवश्यकता होती है वह अश्क जी में है । उनका वस्तु-विन्यास नाटक के विभिन्न तत्वों में अपने में समोकर एक वैज्ञानिक विकास-क्रम और शिल्पचातुर्य के साथ होता है । वस्तु-विन्यास और उद्देश्य के समष्टिगत प्रभाव को पूर्ण बनाने के लिए संवाद नाटक का एक उपयोगी अंग है । अश्क के नाटकों की भाषा चलती हुई मुहाविरेदार, पात्र और समय के सर्वथा अनुकूल रहती है । अश्क जी के संवादों की सबसे बडी विशेषता है उनमें यथास्थान हास्य और व्यंग्य का पुट ।

---

१ श्री जगदीशचंद्र माथुर - नाटककार अश्क - पृ.१४ ।

२ - वही - ,, पृ.१३ ।

३ - वही - ,, पृ.१० ।

चरित्र चित्रण के बारे में अश्क जी काफी सफल रहे हैं । अपने व्यापक जीवनानुभव के कारण अपने नाटकों में यथार्थ चरित्रों की सृष्टि की है । नारी के प्रति उनके मन में असीम श्रध्दा और अगाध वेदना है । अपने नाटकों में अश्क जी ने विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है । अश्क जी ने विवाह और प्रेम की समस्या के सामाजिक पक्ष-मंजर याने पृष्ठभूमि पर विविध-संस्कारोंवाली नारियों के चित्र खींचे हैं । `जय-पराजय`, `छठा बेटा`, `अलग-अलग रास्ते`, `उडान`, `कैद`, `स्वर्ग की झलक`, `अंजोदीदी`, इ.नाटकों में अश्क जी ने नारी को संगिनी बना रखा है । उसे न दासी बनाया है, न खिलौना और न ही देवी । जहाँतक पत्नी का सम्बन्ध है अश्क जी ने अपने नाटकों में भारतीय नारी के विभिन्न रूप ही प्रस्तुत किये हैं ।

हिंदी नाट्य साहित्य में यथार्थवादी सामाजिक स्वर, मनोवैज्ञानिक व्यापकता एवं गहराई लाने में अश्क जी सफल हुए हैं । अश्क जी के पूरे नाटक इससे परिपूर्ण हैं । उनके - जय-पराजय` में ऐतिहासिक कथावस्तु है, परंतु ऐतिहासिक कथावस्तु को उन्होंने तत्कालिन युग-सत्यों से हमें परिचित कराया है ।

`स्वर्ग की झलक` में मध्यवर्गीय आधुनिकताओंके अस्वस्थ सामाजिक जीवनपर व्यंग्य है । बदलते परिवेश के प्रति उनके नाटक सजग हैं । वह अश्क जी की शैली के चरम-विकास एक चरण है ।

`छठा बेटा` संकलनत्रय की पूरी कसौटीपर उतरता है । मध्यवर्गीय धरातलपर पिता-पुत्र के मानवीय सम्बन्ध और एक दूसरे के प्रति पारिवारिक दायित्व के साथ मध्यवर्गीय जीवन की परिस्थितियों से प्रभावित व्यक्ति-स्वार्थ-जन्य भावनाओं का हास्य-व्यंग्यपूर्ण यथार्थ चित्रण है ।

`अलग - अलग रास्ते` में विवाह और प्रेम की, नारी की सामाजिक प्रतिष्ठा की समस्या है ।

'उडान' में स्त्री-पुरुष के असंतुलित सामाजिक सम्बन्धों में संतुलन बैठाने की समस्या है।

'कैद' में वैवाहिक विषमता के साथ ही आज के असंतुलित पति-पत्नी के सम्बन्धों के कारण बिगड़नेवाली सामाजिक परंपरा की ओर इशारा करता है।

'अंजोदीदी' में वैचारिक जुल्म के साथ किसी भी बात की अति, सारे परिवार को बिखरा देती है, चित्रण है। इस प्रकार अश्क जी के नाटकों में बदलते हुए परिवेश और नवीन सामाजिक दृष्टि है। पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं की व्यावहारिक व्याख्या प्रस्तुत की।

हिंदी का 'समस्या नाटक' अंग्रेजी के 'प्रॉब्लेम प्ले' शब्द का हिंदी रूपांतर भी है। समस्या नाटकों के सबसे अधिक प्रतिष्ठाप्राप्त बर्नार्ड शॉ है। समस्या नाटक का प्रतिपाद्य होता है - सामाजिक सीमाओं के भीतर के विरोधों और संघर्षों को प्रकट करना। हिंदी के समस्या आधुनिक समस्या नाटकपर 'इब्सन' का प्रभाव है। हिंदी के समस्या नाटक की परंपरा का सूत्रपात लक्ष्मीनारायण मिश्र जी ने किया है। उनके समस्या नाटक है -- राक्षस का मंदिर, मुक्ति का रहस्य, संन्यासी, आधी रात, सिन्दुर की होली। संन्यासी- में गोरी जातियों की वर्ण-उच्चता की समस्या के साथ ही विवाह और प्रेम की व्याख्या प्रस्तुत की है। इसमें मिश्र जी कहते हैं कि -'संसार की सारी समस्याएँ, जिनके लिए आजकल इतना शोर मचा है, तराजू के पलडेपर नहीं सुलझायी जा सकी ... वे पैदा हुई बुध्दि से और उनका उत्तर भी बुध्दि से ही मिलेगा।'[1] अनमेल विवाह की प्रथा और उसके अनाचार की स्थिति का चित्रण है। राक्षस का मंदिर - इसमें अमुक्त काम की समस्या के साथ मानवी स्वभाव के उतार-चढाव को चित्रित है। मुक्ति का रहस्य - इसमें मिश्र जी पश्चिम के मुक्तभोगी आदर्श

---

१ लक्ष्मीनारायण मिश्र - संन्यासी - पृ.५० ।

को स्वीकार नहीं करते । भारतीय विधान के अनुसार नारी उसी पुरुष की हो कर रहना चाहेगी, रहना चाहिए, जीवन में आ जाता है और उसके शरीर पर अधिकार कर लेता है ।

`आधी रात - इसमें मिश्र जी ने पश्चिम के भोगवाद के प्रति प्रतिक्रियात्मक विद्रोह भाव ने पात्रों को आध्यात्मिक प्रयोग की ओर उन्मुख किया है ।

`राजयोग - पुरुष और नारी के जीवन की समस्या को वाणी दी है । पापी और पाप के बारे में मिश्र जी का कहना है कि पापी एक पाप को छिपाने के लिए दूसरा पाप कर जाता है

`सिन्दूर की होली - विधवा-विवाह और प्रथम दर्शनी उत्पन्न प्रेम से प्रेरित विवाह की समस्याओं को प्रस्तुत किया है । मिश्र जी प्रमुख समस्या नाटककार है ।

इसके बाद सेठ गोविंददास के प्रकाश, सिध्दान्त-स्वातंत्र्य, सेवा-पथ बड़ा पापी कौन ? हिंसा या अहिंसा, संतोष कहाँ ? सुख किसमें ? महत्व किसे ? दुःख क्यों ? प्रेम या पाप, त्याग या ग्रहण इ. समस्या-नाटक है ।

प्रोफेसर कृपानाथ मिश्र जी ने `मणिगोस्वामी' की सुंदर कृति दी है ।

श्री गणेशप्रसाद द्विवेदीजी ने सोहाग बिन्दी, वह फिर आयी थी, दूसरा उपाय भी क्या है ? सर्वस्व-समर्पण, इ. समस्या नाटक प्रदान किए ।

गोविंदवल्लभ पंतजी ने अंगुर की बेटी, सुहाग बिन्दी, इ. नाटक लिखे हैं ।

उदयशंकर भट्ट जी ने अपने नाटकोंद्वारा समाज की समस्याओं का प्रस्तुतिकरण किया है । हरिकृष्ण प्रेमी ने अपने राष्ट्रीय एवं ऐतिहासिक

पक्षोंद्वारा नाटकों में समस्याओं का प्रतिवादन किया है । भगवतीप्रसाद बाजपेयी , भगवतीचरण वर्मा आदि समस्या नाटककारों ने समस्या नाटक को अपना - अपना योगदान देकर गरिमा मंडित किया है ।

इन समस्या नाटककारों में प्रमुख उपेंद्रनाथ अश्क जी का ' अंजोदीदी ' नाटक बडा प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण है । इसकी कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र, संवाद, भाषाशैली, उद्देश्य एवं अभिनेयता सभी अपनी अपनी जगह सही है, परिपूर्ण है । अभिनेय नाटक होने के कारण यह अपना एक अलग ही स्थान रखता है । साथ ही नाटककार उपेंद्रनाथ अश्क जी स्वयं एक अभिनेता और निर्देशक है तो नाटक को प्रभावशाली बनाने में उनके इन रुपों का बडा जबर्दस्त योगदान रहा है । नाटक नायिकाप्रधान है और नायिका है ' अंजली ' उर्फ ' अंजोदीदी ' अपने नाना से विरासत में मिले गुणों को अपने ऊपर आरोपित करना,इतना ही नहीं आजीवन उसके प्रति दृढ रहना,जीवित रहते हुए इन गुणों का दुर्लक्षित होना देखकर अपने आप को खत्म करना,यह सब मुझे आश्चर्यकारक एवं प्रभावशाली लगा ।

अंजोदीदी की कथावस्तु एक पारिवारिक समस्या से सम्बध्द है । असल में हमारे परिवार की एक सनातन त्रासदी है कि - अभिभावक एवं माँ-बाप अपने बच्चों पर अपने विचार लादते हैं । वैचारिक जुल्म एक नैतिक अपराध है । इसीकारण होता यह है, कि मानसिक रुझान रुक जाता है और उनके जीवन का स्वाभाविक विकास अवरुध्द हो जाता है । इसकी कथावस्तु मनोवैज्ञानिक है ।

सफाई, नियम एवं शिस्तप्रियता बुरी चीजें नहीं हैं मगर ये सब अति की सीमापर पहुँचने पर बुरी लगती हैं । किसी भी बात को सनक की हदतक ले जाना आदमी के लिए जायज नहीं है, क्योंकि आदमी आदमी है, यंत्र नहीं । कथावस्तु दो भागों में विभाजित होकर भी एकत्र एवं प्रभावशाली है ।

चरित्र-चित्रण की दृष्टि से यह नाटक महत्वपूर्ण है । नाटक का शीर्षक 'अंजोदीदी' है, इसलिए यह नायिकाप्रधान नाटक है । सारी कथावस्तु एवं घटनाएँ केवल 'अंजोदीदी' पर निर्भर हैं । 'अंजोदीदी' का चरित्र आकर्षणात्मक, प्रभावशाली है । इसके साथ ही 'श्रीपत' प्रमुख है जो नाटक के उद्देश्य को प्रतिफलित करता है । 'इंद्रनारायण - अंजो के पति, नीरज - अंजो का बेटा, अनिमा, ओमी, मधु, मुन्नी, नजीर आदि गौण पात्र हैं ।

इसका कथानक २० साल के अंतराल को एकत्रित करता है । यह समस्या किसी भी आधुनिक अहंवादी परिवार में हो सकता है ।

इसके संवाद सटीक, प्रयोगशील, छोटे छोटे हैं । विविधांगी पात्रों के द्वारा विविध भाषाओं के शब्दों का प्रयोग संवादों में पाया जाता है ।

देशकाल वातावरण की दृष्टि से भी परिपूर्ण है । इसमें राजनीतिक भ्रष्टाचार-उत्कोच की समस्या एवं कॉंग्रेस की स्थिति का चित्रण भी है ।

भाषाशैली प्रमुख एवं प्रभावशाली है । भाषाशैली में विविध शब्दों के रूप, मुहावरों का प्रयोग प्रयुक्त है ।

उद्देश्य की दृष्टि से यह रचना एक संदेश देती है कि आदमी यंत्र नहीं है, उसमें भावनाएँ हैं । इसका उद्देश्य ध्वनित नहीं है, व्यंजक है ।

हमें ऐसा लगा कि अंजोदीदी नाटक हमारे आजकल के परिवार के समस्या को लेकर रचा गया है । परिवार के सभी लोग कई बार अपनी सनक या खास विचार के कारण औरोंपर दबाव डालते हैं । उनकी निजी भावनाओं को, इच्छाओं को, बिना सोचे ही वे अपने ही भावों को निर्दोषा जताते हैं । हाँ । किसी अच्छे विचार या कृति को दूसरोंपर लादना कुछ हदतक ठीक हो सकता है, परंतु किसी अच्छी बात का 'अति' हमारे पारिवारिक जीवन को बिगाड देता है । क्योंकि हम औरों की इच्छा,

आकांक्षा, चाह, अभिरुचि आदि के बारे में कम सोचते हैं । 'अंजोदीदी' नाटक का प्रधान पात्र 'अंजोदीदी' एक ऐसा पात्र है जो रूढ़ विचारों से प्रवृत्त है, किंतु औरोंपर अति के रूप में उसके लादे जानेपर सारा परिवार ही नहीं, स्वयं 'अंजोदीदी' को भी बहुत दु:ख झेलना पड़ता है, यहाँ तक कि, अंत में वह स्वयं आत्मघात कर लेती है ।

निष्कर्ष ----

'हमारे जीवन में कई प्रकार के व्यक्तियों से हमारी मुलाकात होती है । हर एक व्यक्ति अपना अलग व्यक्तित्व आचार रखे हुए है । यह जरूरी नहीं है कि कोई दो व्यक्ति पूर्णत: एक-दूसरे से मिलते हो या भिन्नता रखते हो । परिवार के और सदस्य भी उनके जैसे हो, किंतु यह संभव नहीं । आदर्शवादिता का एक रूप 'अंजोदीदी' है जो अपने को और औरों को जडयंत्र मानती है और उसीतरह पूर्ण व्यवहार रखना चाहती है, किंतु मनुष्य यंत्र नहीं हो सकता, वह चेतन है और उसमें इच्छा, ज्ञान और क्रिया जैसी शक्तियाँ प्राप्त रहती है । आधुनिक मनोविज्ञान ने फीलिंग, थिकींग, 'विलिंग' जैसे शब्दों में इन्हें व्यक्त किया है । मनुष्य में विचारों के साथ भी होते है, जिनके कारण वह सुख दु:ख, तृष्णा और तृप्ति, राग और विराग का अनुभव लेता रहता है । इसीकारण इसके जीवन में विविधता है, मजा है । अनिष्टों का सामना करने में वह आनंद पाता है और इष्टों को प्राप्त करने पर समाधान का अनुभव करता है, साथ ही वह औरों को भी संतुष्ट करना और देखना चाहता है । खास तौर पर भारतीय नारी । अंजोदीदी अपनी तरह औरों को भी मशीन बनाना चाहती है और उन्हें वैसे न बने हुए देखकर बेचैन बन जाती है । इसके मन के संघर्ष को नाटककारने संयम

पूर्ण शब्दों में व्यक्त किया है और वर्तमान पारिवारिक जीवन की इस समस्या को प्रस्तुत किया है । सनक किसी भी सामान्य प्रवृत्ति की अतिवादी सीमा है और इसी लिए उसतक पहुँच जाना उतना बुरा नहीं है, जितना कि, वहाँ पहुँचकर पीछे लौटने से इन्कार कर देना ।

••

संदर्भ ग्रन्थ सूचि

१ अंजोदीदी - एक मूल्यांकन - सतीशचंद्र श्रीवास्तव

२ अंजोदीदी - एक मूल्यांकन - कमलेश्वर

3 आधुनिक हिंदी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना - डॉ.वीणा गौतम

४ आधुनिक हिंदी नाटक - डॉ.नगरंद्र

५ आधुनिक नाटकों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डॉ.गणेशदत्त गौड

६ समस्या नाटककार अश्क - डॉ.उमाशंकर सिंह

७ साहित्यकार अश्क - डॉ.कपिलदेव रॉय

८ हिंदी नाटक : मूल्यसंक्रमण - डॉ.गिरिराज शर्मा " गुंजन "

९ हिंदी साहित्य :युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ.शिवकुमार शर्मा

१० हिंदी कहानी - एक अंतरंग परिचय - उपेंद्रनाथ अश्क

११ हिंदी के समस्या नाटक - डॉ.विनयकुमार

१२ हिंदी नाटकों की शिल्पविधिका विकास - डॉ.शांति मलिक

१३ नाटककार अश्क - गोपालकृष्ण कौल

१४ नाटककार अश्क (सं.) कौशल्या अश्क

१५ नाटक और मंच (चिंतन,परिचर्चा और समीक्षा) निशांतकेतु

१६ द प्रॉब्लेम प्ले - आर.सी.गुप्त

१७ पत्थर-अल-पत्थर की भूमिका - भैरवप्रसाद गुप्त

१८ रंगमंच और नाटक की भूमिका - डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल ।

..